वन्दना

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणम्, वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्, वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरणम्॥

शुद्धिकरण मंत्र

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्बदे, सिन्धु, कावेरी, पवित्राणि सदा मम॥

ह्रीं
ॐ
ह्रीं
ब्रह्मा
विष्णु
शिव
ॐ ब्रह्मा ॐ
ॐ विष्णु ॐ
ॐ शिव ॐ
ॐ राम ॐ

* परम ब्रह्म परमेश्वर एवं आदि शक्ति भक्तों से विनम्र निवेदन *

इस संसार में ऐसी कोई शक्ति है जो संसार के पूरे चक्र को चलाती है। ऐसी सभी धर्मों व उनके धर्म ग्रन्थों द्वारा प्रदर्शित होता है। भारतीय हिन्दू संस्कृति के ग्रंथों वेद, पुराण एवं आध्यात्मिक मतानुसार वो शक्ति पर ब्रह्म निराकार है। जो एक ज्योति स्वरूप गोल आकार में है उसमें ओम विद्यमान है। ओम पर चक्राधार बिन्दू है। बिन्दू भी ज्योति स्वरूप है। यही परम ब्रह्म निरंकार के रूप से जाने जाते हैं।

चन्द्रकार बिन्दू वाले ओम के चारों ओर ज्योति का आवरण है अगर ओम के चारों तरफ ज्योति का आवरण एवं ज्योतिस्वरूप चन्द्रकार बिन्दू हट जाये तो ओम का कोई अस्तित्व नहीं रहता। अगर परम ब्रह्म ज्योति स्वरूप निरंकार के बीच से ओम हट जाये तो परम ब्रह्म के चारों तरफ ज्योति एवं चन्द्राकार ज्योति का कोई अस्तित्व नहीं रहता है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक है। ये यर्थाथ है।

आदि शक्ति ज्योति द्वारा ही ओम में से त्रिदेव साकार रूप में आये हैं। जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव के नाम से जाने जाते हैं। ये तीनों ओम त्रिगुणात्मक स्वरूप है। इन तीनों में शक्तिका समावेश है।

2. अगर ब्रह्मा में से शक्ति स्वरूप माँ शब्द हटा दिया जाये तो ब्रह्मा का कोई अस्तित्व नहीं रहता है और विष्णु में से वि की मात्रा हटा दी जाये तो विष्णु का कोई अस्तित्व नहीं रहता, अगर शिव में ि की मात्रा हटा दी जाये तो शिव का कोई अस्तित्व नहीं रहता है। ये एक-दूसरे के पूरक है।

आध्यात्मिक मतानुसार संसार में जीतने भी पुरूष तत्व है वह सब ओम स्वरूप है और जितना भी स्त्री तत्व है वह ज्योतिस्वरूपा है।

परम ब्रह्म निराकार की ज्योति (चैतन्यता) संसार के प्राणी मात्र के शरीर रूपी जड में विद्यमान है। अगर ज्योति (चैतम्यता) शरीर रूपी जड़ से निकल जाती है तो शरीर रूप जड़ समाप्त हो जाता है और अगर शरीर रूपी जड़ नष्ट हो जाये तो ज्योति चैतन्यता नहीं रहेगी। दोनों एक-दूसरे के पूरक है।

परम ब्रह्म निरंकार में विद्यमान ओम को साकार में कोई ब्रह्मा के नाम व कोई विष्णु एवं कोई शिव के नाम से भजता है।

जब तक प्राणी निरंकार परम ब्रह्म की ज्योति (शक्ति) ओर ब्रह्मा, विष्णु, शिव के त्रिगुणात्म स्वरूप ओम के साथ नहीं भजेगा। उसकी आत्म ज्योति उस ब्रह्मा ज्योति में विलिन नहीं होगी।

शक्ति ज्योति का बिज है ह्रीं तो प्राणी ही ॐ ह्रीं का ध्यान लगा कर स्मरण करेगा तो आत्म ज्योति ब्रह्म ज्योति में विलीन हो जायेगी।

साथ में जो प्राणी ओम के शिव रूप का ध्यान करता है। वो शक्ति सहीत शिव को ॐ शिव ॐ का ध्यान लगा कर स्मरण करेगा के शिव में विलीन हो जायेगा।

मनुष्य प्राणी के शरीर में आत्मा रूप ज्योति (चैतन्यता) है। उसके चारों तरफ काम, क्रोध, मद, मोह का आवरण है जो उस प्राणी को सद् मार्ग पर जाने में बाधा डालते हैं। इस आवरण को हटाने के लिये मनुष्य प्राणी को ज्योति स्वरूप आत्मा को प्रबल बनाना पड़ेगा उसे बनाने के लिये ॐ राम ॐ का ध्यान लगा कर स्मरण करेगा तो आत्मा प्रबबल हो जायेगी। राम का पर्यायवाची शब्द है आत्मा (लोग आत्मा राम के नाम) से पुकारते है। ॐ राम ॐ स्मरण करते-करते ये इतनी प्रबल हो जायेगी कि जब भी प्राणी अपने इष्ट देवता के धाम जायेगी तब ये आत्मा शरीर के दश इन्द्रियों के द्वार बन्द कर देगी। (अर्थात् न आँख से निकलेगी न नाक से निकलेगी ना ही कान से मुँह से एवं नीचे के द्वार से निकलेगी।) वो तो प्राणी के सिर के कपाल द्वार को खोल कर निकल जायेगी। और परमब्रह्मा की ज्योति में विलीन हो जायेगी और उस प्राणी का संसार में जन्म नहीं होगा। आवागमन से मुक्ति मिल जायेगी।

इस लिये प्राणी को निम्न जप करने चाहिये। सेवक का तो विनम्र निवेदन है कि आप स्मरण करे या नहीं करे आप पर निर्भर करता है।

1. ह्रीं ॐ ह्रीं
2. ॐ शिव ॐ
3. ॐ राम ॐ

अगर प्राणी ब्रह्मा स्वरूप को मानता है तो शिव की जगह ॐ ब्रह्मा ॐ और अगर प्राणी विष्णु स्वरूप को मनाता है तो ॐ विष्णु ॐ का स्मरण करे।

अध्यात्मिक मतानुसार बहुत लोग ओम को पूर्ण ब्रहम मान कर उसका जाप करते हैं ॐ पर चन्द्रकार शक्ति बिन्दू है इस लिये ओम शक्ति एहीत पूर्ण ब्रह्म है। लेकिन उसका जप करने पर भी ज्योति स्वरूप आत्मा के चारों ओर काम क्रोध, मद, मोह का आवरण है वो नहीं हटता है। इस आवरण के होते हुये बड़े-बड़े ज्ञानी, सिद्ध संत, महात्मा, को ये काम क्रोध, मद, मोह का आवरण चक्र पथ भ्रष्ट कर उसे रसातमल में भिजवा देता है। उस आवरण को हटाने के लिये आदि शक्ति ज्योति का ही बिज का समंपुट लगाना जरूरी है। इसलिये ओम के आगे ह्रीं बीज लगाये ह्रीं ॐ ह्रीं (वैसे तो उपर दिये गये तीनों मंत्र का स्मरण जप करे।) मेरी तो कर वध प्रार्थना है आप करे नहीं कर आपकी श्रद्धा पर है। गलती के लिये क्षमा-

शिव शक्ति के भक्तों का दासानुदास,
गुलाब जोशी
354 शिव-शक्ति निवास,
प्रथम चौराहा नाहरगढ़ रोड़,
जयपुर (राज.)

अनुक्रमणिका

* श्री गणपति वन्दना *

"शिव-शक्ति"

ॐ गं गणपति गणराज मनाऊँ।
रिद्धि-सिद्धि के स्वामी देवा, तुम को नित की ध्याऊ॥
ॐ गं गणपति..............................

हे शिव नन्दन, करू मैं वंदन, तुमको शीश नवाऊँ।
गौरी सुत शुभ, लाभ के पिता, श्री कर दर्शन हरषाऊँ॥
ॐ गं गणपति..............................

प्रथम पूज्य है देव शिरोमणी, तेरी कृपा मैं पाऊँ।
करो दया प्रभु वंश बढ़ाओ, अन्न, धन यश मैं पाऊँ॥
ॐ गं गणपति..............................

"शिव-शक्ति" के लाड दुलारे तेरे गुण मैं गाऊँ।
नयन बसाऊँ, छवि निहारू, चरणों में झुक जाऊँ॥
ॐ गं गणपति..............................

*** माँ ब्रह्मणि, रूद्राणी, कमला रानी की त्रिगुनात्मक स्वरूपा आदि शक्ति महासरस्वती की वंदना***

परमब्रह्मा परमेश्वरी सरस्वती मया द्रष्टा, वीणा पुस्तक धारिणी
हंस वाहन समायुक्ता, विद्या, ज्ञान, धन, ऐश्वर्य दानम् करो मम।

* परम्ब्रह्म स्वरूप गुरूदेव राम कृष्ण परमहंस एवं आदि शक्ति स्वरूपा गुरवाणी माँ शारदा की वंदना*

"शिव-शक्ति"

गुरू की महिमा अपरंपार।
गुरू ब्रह्मा और गुरू है विष्णु, गुरू है शिव त्रिपुरार॥
गुरवाणी माँ ब्रह्माणी, कमला राणी महतार।
गुरूवाणी मां, रुद्राणि, अन्नूपर्णा माँ दातार॥

गुरू की महिमा..................

गुरू गणेश है, गुरू कार्तिक है देवन के सरदार।
रूद्र ग्यारवे गुरूे हनुमत हैं, गुरू भैरव सरकार॥

गुरू की महिमा..................

ॐ रूप ही गुरूदेव है, ज्योति गुरवाणी महतार।
परम् ब्रह्म है निरंकार गुरू, "शिव-शक्ति" साकार॥

गुरू की महिमा..................

* परम्ब्रह्म श्री तारकेश्वर नाथ की मंगला स्तुति *

"शिव-शक्ति"

अब तो जागो जी तारक जी भक्तन प्रतिपाला।
थाके द्वार खड़ा सेवा कर बाला॥
म्हे सब शरणे आया थाकी। जल्दी से दे देवो झाकी॥
देखो जाग गया गणपत लाला। अब तो जागो जी........

जाग्याई है मात भवानी। संग मेंजाग्या कार्तिक ज्ञानी॥
देखो नन्दी गण ऊबा मतवाल। अब तो जागो जी......
थाके शिवा प्रभु कुण म्हाको। म्हाने एक आसरों थाको॥
अब तो सुणल्यो शिव डमरू वाला। अब तो जागो जी.....

परमब्रह्म परम शिव की मानसिक पूजा

''शिव-शक्ति''

परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म, मेरी मानिकस पूजा प्रभु स्वीकारो

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म.........

प्रथम पुज्य गणराज मनाऊ, माँ शारद को शीश नवाऊँ।

करके नमन गुरूदेव, गुरूवाणी को, करू मैं पूजा प्रभु स्वीकारो॥

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म.........

अरघ्यादी दे स्नान कराऊ, पय दधी, घृत, मधु शर्करा लाऊँ॥

पंचामृत अभिषेक कराऊँ, सर्वण जरी के वस्त्र भी धारो॥

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म........

गंगाक्षत पुष्पन की माला, धूप, दीप, नैवेद्य रसाला॥

कर, आचमन पावो-पान सुपारी, गंगाजल को है योझारो॥

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म...........

ले कपूर मैं आरती करता। पुष्पांजली चरणों में धरता॥

तारकब्रह्म तुम्हे नमन मैं करता, धन, परिवार, बढावो म्हारो॥

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म.......

आत्म ज्योति को प्रभु जगा दो, ध्यान धरू ऐसी लगन लगा दो॥

आवागमन को फैरो मिटाज्यो, ''शिव-शक्ति'' मुने थाको सहारो॥

सब संकट टारो। परम ब्रह्म हे तारक ब्रह्म......

"शिव-शक्ति"

मुखड़ा- आवो भोजन करवा ने शिव थांका भक्त बुलावे जी।
बाट जो रहा सब ये थांकी देखो सोण मनावे जी॥

अन्तरा- सब भक्ता की अरज सुणी जद तारक बाबा आयाजी।
संग में शिवा भवानी, गणपति, कार्तिकजी ने लायाजी॥
आओजी सरकार बैठो आसन माले आर,
गंगा मैया हाथ धुलावेजी
बाट जोरह्या सब ये थांकी......

जीमो म्हारा प्राण प्रिया या कहबा लागी पार्वती।
संग में खुद भी जीमण लागी शिवा भवानी महासती॥
दोन्यू लाला ने साथ बिठार अपना हाथ से वाने जीमार,
मन में फूली नहीं समावे जी
बाट जोरह्या सब ये थांकी....

जीम चुक्या जद तारक बाबा वीरभ्रद भी आया जी।
सबने ये बाबा का सेवक आचमन करवाया जी॥
सारा गण थांका सरदार परसादी पाई सब आर,
देखो "शिव शक्ति" हरषावैजी
बाट जोरह्या सब ये थांकी......

* शिव सेवा स्वीकार्य हेतु क्षमा याचना*

"शिव-शक्ति"

म्हारी सेवा भोला स्वीकारो। सेवा में कोई भूल हुई,

गुनाह माफ करो म्हारो॥

विधि, विधान, ज्ञान नहीं मोहे सेवा कर लीनी।
मन्त्र, तन्त्र, बिन, भोग लगा थाकी आरती भी कीनी॥

मैं सेवक हूँ भोला थारो, सेवा में कोई भूल हुई.......

थांका चरणा में ही ध्यान राखज्यो, अरजी सुणो म्हारी।
पार लगाज्यो जब धाम बुलाओ, भोला भण्डारी॥

मुने एक थाको ही सहारो। सेवा में कोई भूल हुई.......

कांई अरज करू थाने सब जाणो त्रिपुरारी।
बात जायली थाकी हे "शिव-शक्ति" महतारी॥

मन चायो फल थे दे डारो। सेवा में कोई भूल हुई.........

* शिव की रूप श्रृंगार स्तुति*

"शिव-शक्ति"

कैसो अद्‌भुत् रूप धर्‌यो है जी, बाबा बागम्बर धारी।
मणी मोत्या रो मुकुट सजायो जी, केसर तिलक त्रिपुंड लगायो जी।
कैसी शोभित हो रही है या देखो चन्द्रछवी न्यारी॥

कैसो अद्‌भुत रूप धर्‌यो.........

गल में नागराज फणधारी जी, रुद्राक्ष की माला है भारी जी।
पन्ना मोती, जड़ित ये कुण्डल थाकी कर्ण छवि प्यारी॥

कैसो अद्‌भुत रूप धर्‌यो.........

कर में त्रिशुल, डमरू सोहे जी, गणपति, कार्तिकजी मन मोहे जी।
रहती संग में सदा भवानी जी बाबा भोला भण्डारी॥

कैसो अद्‌भुत रूप धर्‌यो.........

दरशण करबा जो भी आवेजी, भव सागर से वो तीरजावे जी।
मैं भी शरण पडयो हूँ थाकी शिव तारक जी त्रिपुरारी॥

कैसो अद्‌भुत रूप धर्‌यो.........

* शिव प्रातः स्मरण स्तोत्रम् *

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गंगाधरं वृषभवाहनमन्बिकेशम्।
खट्वांग शूलवरदाभयहस्तमीशं
संसार रोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ 1 ॥

प्रातर्नमामि गिरीशं गिरिजार्द्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम्।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसार रोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ 2 ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादि भेदरहिंत षड्भावशून्यं
संसार रोगहरमौषधम द्वितीयम् ॥ 3 ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं
हित्वा पदं यांति तदेव शम्भोः ॥ 4 ॥

* श्री शिवस्तुति चालीसा *

दोहा–जै गणेश गिरिजासुवन, मङ्गल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देव अभय वरदान॥

चौ.–जै गिरिजापति दीनदयाला। सदा करत संतन प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के॥
अंगगौर शिर गङ्ग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहैं। छवि को देखि नागमुनि मोहैं॥
मैना मातु कि हवे दुलारी। वाम अंग सोहत छवि न्यारी॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन् क्षयकारी॥
नन्दि गणेश सोहैं तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ॥
देवन जबहीं जाय पुकारा तबहीं दु:ख प्रभु आप निवारा॥
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिति तुमहिं जुहारी॥
तुरत षडानन आप पठायउ। नवनिमेष महँ मारि गिरायउ॥
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई॥
कियो तपहि भागीरथ भारी। पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं॥
वेद नाम महिमा तब गाई। अकथ अनादि भेद नहीं पाई॥
प्रगटे उदधि-मथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये बिहाला॥
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥
सहस-कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल. नैन पूजन चह सोई॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर॥
जय जय जय अनंत अविनासी। करत कृपा सबके घट बासी॥

दुष्ट सकल मिल मोहिं सतावै। भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै॥
त्राहि-त्राहि मैं नाथ पुकारों। यहि अवसर मोहि आन उबारो॥
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आनि उबारो॥
माता पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोँ॥
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी।
धन निरधन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वा फल पाहीं॥
अस्तुति केहि विधि करों तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥
शंकर हो संकट के नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारन॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। शारद नारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जै नमो शिवाये। सुरब्रह्मादिक पार न पाये॥
जो यह पाठ करै मन लाई। ता पर होत हैं शंभु सहाई॥
ऋणियाँ जो कोई हो अधिकारी। पाठ करै सो पावन हारी॥
पुत्र हीन इच्छा कर कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥
पंडित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावै॥
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। तन नहिं ताके रहे कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। शंकर सन्मुख पाठ सुनावै॥
जन्म जन्म के पाप नसावै। अन्त वास शिवपुर में पावै॥
कहैं अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी॥

नित्य नेमकरि प्रातही, पाठ करों चालीस।
तुम मेरी मनकामना, पूर्ण करहु जगदीश॥
मंगसर छठि हेमन्त ऋतु, सम्बत चौंसठ आन।
स्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्यान॥

* अथ शिवस्तुति प्रारम्भ *

दोहा-श्री गिरिजापति बन्दि कर, चरण-मध्य सिर नाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मो पर होहु सहाय।

* कवित्त *

नन्दी की सवारी नाग अङ्गीकार धारी
नित संत सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुण्डमाल भारी सिर सोहे जटाधारी
वाम अङ्ग में बिहारी गिरिराज सुतवारी हैं॥
दानी रखे भारी शेष शारदा पुकारी
काशीपति मदनारी कर शूलचक्र धारी हैं।
कला उजियारी लख देव सो निहारी
यशगावैं वेदचारि सो हमारी रखवारी हैं॥ 1॥
शंभु बैठे हैं विशाला अङ्ग हो निहाला
पिवैं भंग नित ह्वे मतवाला अहि अङ्ग पै चढ़ाये हैं।
गले सौहे मुण्डमाला कर डमरू विशाल अरू
ओढ़े मृगछाला भस्म अङ्ग में लगाये हैं।
संग सुरभी सुतशाला कर जगत् प्रतिपाला
मृत्यु हरे अकाला शीश जटा को बढ़ाये हैं।
कहैं रामलाल मोहि करौ तुम निहाल
गिरिजापति भोला जैसे काम को जलायें हैं॥ 2॥
मारा है जलंधर औ त्रिपुर को संघारा।
जिन जारा है काम जाके शीश गंग धारा है।

धारा है अपार जासु महिमा है तीन लोक
भाल सोहै इन्दु जाके सुखमा का सारा है ॥
सारा है बात सब खायो हलाहल जानि
जगत् के आधार जाहि वेदन उचारा है।
चारा है भाग जाके द्वार है गिरीश-कन्या
कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है ॥ 3 ॥
अष्ट गुरू जानी जाके मुख वेदवानी
शुभ भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करैं।
मुण्डन के माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै
दासन के दास जाके दारिद दहा करै ॥
चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी
कहत कविअनन्दी नाहक नर हांहा करैं।
जगत रिसाय यमराज को कहा बसाय
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करैं ॥ 4 ॥
गौर शरीर में गौरि विराजत मौर जटा
सिर सोहत जाके। नागन को उपवीत लसे
ये अयोध्या कहैं शशि भाल में वाके ॥
दान करै पल में फल चारि औ टारत
अंक लिखे विधना के। शंकर नाम निशंक
सदाहि भरोसे रहे निशिवासर ताके ॥ 5 ॥

*** दोहा ***

मंगसर मास हेमन्त ऋतु छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्या प्रातहि, शिव के विनय समुद्ध ॥

* आरती *

कर्पूरगौरं करूवणावतारं
संसारसारं भुजगेंद्रहारम्।
सदा वसंतं ह्रदयारविंदे,
भवं भवानी सहितं नमामि॥

* त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु महेश) आरती *

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ १॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरूडासन वृषवाहन साजै॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ २॥

दो भुज चारू चतुर्भुज अष्ट दशभुज सोहै।
तीनो रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ३॥

अक्षमाला वनमाला रूँडमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ४॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरूडादिक भूतादिक संगे॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ५॥

गायत्री अरू लक्ष्मी, पार्वती संगे।
त्रिभंगी अर्द्धंगी सिर सोहत गंगे॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ६॥
कर में श्रेष्ठ कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्त्ता
सुख करता दुःख हरता जग पालन कर्ता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ७॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनो एका॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ८॥
काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दो ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत, भोलाजी को दर्शन
पावत, महिमा अति भारी।
ॐ हर हर हर महादेव॥ ९॥
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै॥
भनत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावै॥
ॐ हर हर महादेव॥ १०॥

* भगवान शंकर की आरती *

"शिव-शक्ति"

ॐ जय शंकर भगवान, म्हारा स्वामी जय शंकर भगवान।
संग में रहे हमेशा, माता उमा महान, जगदम्बे मेरी माता उमा महान्।
ॐ जय शंकर भगवान.....

संग में गणपति, स्वामी कार्ति सोहे, प्रभुजी शोभा अति भारी
सिर पर गंग विराजत, कानों में कुण्डल राजत, चन्द्र छवि न्यारी।
ॐ जय शंकर भगवान.....

गल में नागराज शोभित है और पुष्पमाला और रूद्राक्ष माला।
कर में त्रिशूल शोभित, कर में डमरू शोभित पहनों बघ छाला॥
ॐ जय शंकर भगवान.....

भंग धतुरा पीओ प्रभुजी, नंदिया पर घूमो, प्रभुजी नंदिया पर घूमो।
सुलफो, गांजों पीकर, सुलफो-गांजा-पीकर नशा में थे झूमो॥
ॐ जय शंकर भगवान.....

भक्त भीर पड़े जद प्रभुजी, आप ही सहाय करो, आप ही कष्ट हरो
भव सागर में नैया पर, भव सागर में नैया पर मल्लाह को रूप धरो॥
ॐ जय शंकर भगवान.....

जो कोई शिवजी की, जो कोई तारकजी, आरती नित प्रति गावे।
सुख पावे, दुख जावे, घर सम्पत्ति आवे, मन वांछित फल पावे॥
ॐ जय शंकर भगवान.....

* आरती कैलाशवासी की *

शीश-गंग अर्द्धंग-पार्वती, सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी॥ 1॥
शीतल मंद सुगंध पवन बहे, जहाँ बैठे हैं शिव अविनासी॥
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर, राग रागिनी मधुरासी॥ 2॥
यक्ष-रक्ष-भैरव जहाँ डोलत, बोलत हैं वन के बासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुन्जासी॥ 3॥
कल्पद्रुम अरू पारिजात तरू, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहँ डोलत, करत दुग्ध की वर्षा-सी॥ 4॥
सूर्यकांत सम पर्वत शोभित, चन्द्रकांत सम हिमराशी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित, सेवत सदा प्रकृति दासी॥ 5॥
ऋषि मुनि देव दनुज नित सेवत, गान करत श्रुति गुणराशी।
ब्रह्मा विष्णु निहारत निसिदिन, कछु शिव हमको फरमासी॥ 6॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर नित सत्‌चित आनन्द रासी।
जिनके सुमिरत ही कट जाती कठिन काल यम की फाँसी॥ 7॥
त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर प्रेम सहितजो नर गा सी।
दूर होय विपदा उस नर की, जन्म-जन्म शिव पद पासी॥ 8॥
कैलासी काशी के बासी, बाबा अविनासी मेरी सुध लीज्यो।
सेवक जान सदा चरनन को, अपनाने जान कृपाकीज्यो॥ 9॥
अभय दान दीजो प्रभु मुझको, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी॥ 11॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर दुख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भवानी शंकर भोले बाबा हर हर शंकर त्वमशरणम्॥

* द्वादश ज्योतिर्लिंगानि *

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालम् ओंकारम् अमलेश्वरम्॥ 1॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने॥ 2॥
वाराणस्यां तु विश्वेश त्रयम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥ 3॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सांयप्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥ 4॥

* महामृत्युञ्जय मंत्र *

ॐ त्र्यम्बकमं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥

* श्री रूद्राष्टकम-स्तोत्रम् *

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम्। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्। चिदाकाशमाकाशवासंभजेऽहम्॥ 1॥
निराकारमोङ्कारमूलंतुरियम्। गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्॥
करालं महाकालकालं कृपालम्। गुणाकार संसारपारं नतोऽहम्॥ 2॥
तुषारादिसङ्काशगौरं गभीरम्। मनोभूतकोटि प्रभा श्रीशरीरम्॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारूगङ्गा। लसद्भालबालेन्दुकंठे भुजंगा॥ 3॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालम्। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालम्। प्रियं शंकर सर्वनाथं भजामि॥ 4॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।

त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिम्। भजेऽहं भवानीपतिंभावगम्यम्॥ 5॥

कलातीत कल्याण कलपान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।

चिदानन्द सन्दोह मोहपहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ 6॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दम्। भंजतीह लो परे वा नराणाम्।

न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशम्। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥ 7॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजाम्। नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।

जरा जन्म दु:खौघ तात्प्यमानम्। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥ 8॥

श्लोक-रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभु: प्रसीदति॥ 9॥

मंदार माला, कुलिताय कायै।
कपाल मालांकित शेखराय॥
दिव्याम वरायै च दिगम्बराय।
नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

* श्री शिवपन्चाक्षर स्तोत्रम् *

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै ''न'' काराय नमः शिवाय॥ 1॥
मन्दाकिनी सलिल चन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ 2॥
शिवाय गौरी वदनाब्जवृन्द-सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ 3॥
वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य, मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ 4॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ 5॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेत्-शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ 6॥

॥ श्री शंकराचार्य विरचितं शिवपंचाक्षर स्तोत्रं संपूर्णम्॥

* शिव-स्तुति *

धन्य-धन्य भोलेनाथ, बांट दिये, तीनों लोक पल भर में।
ऐसे दीन दयाल मेरे शंभू, भरो खजाना पल भर में।
प्रथम वेद ब्रह्मा को दे दिया, बने वेद के अधिकारी।
विष्णु को दिया चक्र सुदर्शन, लक्ष्मी सी सुन्दर नारी।
इन्द्र को दिया कामधेनु, और ऐरावत सा बलकारी।
कुबेर को कर दिया आपने, सारी सम्पति का अधिकारी

अपने पास पात्र नहीं रखा, मग्न रहे बाघम्बर में।
ऐसे दीन दयाल मेरे शम्भू, भरो खजाना पल भर में।
अमृत तो देवताओं को दिया, आप हलाहल पान किया।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसी को, जिसने शिवजी का ध्यान किया।
भागीरथ को दे दी गंगा, सब जग ने स्नान किया।
बड़े-बड़े पापियों का तारा, पल भर में कल्याण किया।
आप नशे में मस्त रहो, पियो भँग नित खप्पर में।
ऐसेदीन दयाल मेरे शंभु, भरो खजाना पल भर में।
लंका तो रावण को दे दी, बीस भुजा दस शीश दिए।
रामचन्द्र को धनुष बाण, और हनुमत को जगदीश दिए।
मनमोहन को दी दी मोहनी, और मुकुट तुम बख्शीश दिए।
मुक्त हुए काशी के वासी, भक्ति में जगदीश दिए।
आप नशे में मस्त रहे, पियो भंग नित खप्पर में।
ऐसे दीन दयाल मेरे शंभु, भरो खजाना पल भर में।
वीणा तो नारद को दे दी, हरि भजन को राग दिया।
ब्राह्मण को कर्मकांड, और सन्यासी को त्याग दिया।
जिस पर तुमरी कृपा भई उसी को अनगन राग दिया।
जिसने ध्याया उसी ने पाया, महादेव जी से वर में।
आप नशे में मस्त रहो, पियो भंग नित खप्पर में।
ऐसे दीन दयाल मेरे शंभु, भरो खजाना पल भर में।

* श्री शिवाष्टक *

आदि अनादि अनन्त, अखण्ड अभेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचर रूपं महेश कौ, जोगि जती-मुनि ध्यान न पावैं॥
आगम-निगम-पुराण सबैं, इतिहास सदा जिनके गुन-गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावैं।
सृजन, सुपालन लय लीलाहित, जो विधि-हररूप बनावें।
एकहि आप विचित्र, अनेक सुबेस बनाकैं लीला रचावें।
सुन्दर सृष्टि सुपालन करि, जग पुनि बन काल जु खाय पचावें।
बड़भागी नर-नारि सोई, जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावैं॥
अगुन अनीह अनामय, अज अविकार सहज निजरूप धरावैं।
परम सुरम्यबसन-आभूषण, सजि मुनि मोहन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु विलसै, रतन-हार उर पै लहरावै।
बड़भागी नरनारि सोईं जो, साँब-सदाशिव कौ नित ध्यावै॥
अंग विभूति रमाय मसान की, विषमय भुजंमगनि कौ लपटावैं।
नर-कपाल कर मुण्डमाल गल, भालु-चर्म सब अंग उढ़ावैं।
घोर दिगम्बर, लोचन तीन, भयानक देखि कै सब थर्रावैं।
बड़भागी, नरनारि सोईं जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं॥

सुनतहि दीन की दीन पुकार, दयानिधि आप उबारन आवैं।
पहुँच तहाँ अविलब, सुदारून-मृत्यु को मर्म विदारि भगावैं॥
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा, सुचि अजहूं, विज्ञ जन गाइ सुनावैं।
बड़भागी, नरनारि सोई जो, साँब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।
चाउरचारि जो फूल धतूर के, बेल के पात, औ पानी चढ़ावैं।
गाल बजाल कै बोले जो, 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं॥
तिनहि महाफलदेयँ सदाशिव, सहजहि मुक्ति-भुक्ति सो पावैं।
बड़भागी, नरनारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं॥
बिनसि दोष दुःख दुरित दैन्य, दारिद्रयं नित्युसुखशांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब, निरमल बुद्धिचित्तं बकसावैं।
असरन-सरन काटि भवबन्धन, भव जिन भवन भव्य बुलवावैं।
बड़भागी, नरनारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं॥
औढ़रदानील, उदार अपार जु, नैक-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन अशांति, समन संकट, बिरद विचार जनहिं अपनावैं॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के, क्यों न सरन अबहि चलि जावैं।
बड़भागी, नरनारि सोई जो, साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं॥

• शिव-प्रार्थना •

ॐ नमः शिवाय

जय शिवशंकर जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे।

जय कैलाशी जय अविनाशी, सुखराशि सुखसार हरे॥

जय ससि शेखर जय डमरूधर जय-जय प्रेमागार हरे।

जय त्रिपुरारी जय मदहारी, अमित अनन्त अपार हरे॥

निर्गुण जय-जय सगुण अनामय, निराकार साकार हरे।

पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे॥

जय रामेश्वर जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे।

मल्लिकार्जुन सोमनाथ, जय महाकाल ओंकार हरे॥

त्र्यम्बकेश्वर जय घुश्मेश्वर भीमेश्वर जगतार हरे।

काशीपति श्री विश्वनाथ, जय मंगलमय अघहार हरे॥

नीलकंठ जय भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे।

पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे॥

जय महेश जय-जय भवेश, जय आदिदेव महादेव विभो।

किस मुख से है गुणातीत प्रभो, तब अपार गुण वर्णन हो॥

जय भवकारक तारक हारक, पातक दारक शिव शम्भो॥

दीन दुःखर हर सर्व सुखाकार, प्रेम सुधाधर की जय हो॥

पार लगादो भवसागर से बनकर करूणाधार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो पाहि-पाहि दातार हरे॥
जय मन भावन जय अतिपावन, शोक नसावन शिव शम्भो।
विपति विदारण अधम उदारण, सत्य सनातन शिव शम्भो॥
सहज वचन हर जलज नयनवर, धवल वर्ण तन शिवशम्भो।
मदन दहन कर पाप हरण हर, चरण मनन धर शिवशम्भो॥
विवसन विश्व प्रलंकर, जग के मूलाधार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो पाहि-पाहि दातार हरे॥
भोलानाथ कृपालु दयामय ओडरदानी शिव योगी।
निमिष मात्र में दे देते हैं, नवनिधि मनमानी शिव योगी॥
सरल हृदय अति करूणासागर, अकथ कहानी शिव योगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकार, बने मसानी शिव योगी॥
स्वयं अकिंचन जनमन रंजन पर शिव परम उदार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे॥
आशुतोष इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना।
विषम वेदना से विषयों की मायाधीष छुड़ा देना॥
रूप सुधा की एक बूँद से, जीवन मुक्त बना देना।
दिव्य ज्ञान युगल चरणों की लगन लगा देना।

एक बार इस मन मंदिर में, कीजे पद संचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे॥
दानी हो दो भिक्षा में अपनी अनपायनी भक्ति प्रभो॥
शक्तिमान हो दो अवचिल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो।
त्यागी हो दो इस असार संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो।
परम पिता हो दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो॥
स्वामि हो निज सेवक की सुन लेना करूण पुकार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे॥
तुम बिन विकल रहूँ प्राणेश्वर आजवों भगवन्त हरे।
चरण शरण की बाह गहो हे उमा रमण, प्रियकान्त हरे॥
विरह व्यक्ति हूँ दीन दुःखी हूँ दीन दयालु अनन्त हरे।
आवोजी मुझे अपना बनावो आजावो भगवन्त हरे॥
मेरी इस दयनीश दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे॥

*** सोरठा ***

कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिर सुमिर भव उतरहि पारा
सुन मुनि तोहि कहहु सहरोसा, भजहि जे तजि सकल भरोसा
करहूँ सदा तिनके रखवारी, जिमि बालक राखे महतारी॥

"शिव-शक्ति"

मुझ सेवक की भी सुनो, प्रभु मेरे प्राणाधार।
शरण पड्यों मैं आपकी, म्हारी नैया लगावो पार॥ 1॥
हाथ जोड़ विनती करूँ, मैं धरूँ चरनन में माथ।
निश दिन लौं लागी रहे, प्रभु उपापति शिवनाथ॥ 2॥
शिव समान दाता नहीं, कोई विपत मिटारणहार।
लज्जाम्हारी राखियो प्रभु नन्दी के असवार॥ 3॥
शिवजी शिवजी मैं करूँ, म्हारा शिवजी जीव जड़ी।
छवि बसाल्यूं नैन में, पाऊँ दर्शन घड़ी घड़ी॥ 4॥
दानव पति दानी कहे और देव कहे भरपूर।
पूरण करज्यो कामना, म्हारो दारिद करज्यो दूर॥ 5॥
मैं अनाथ तुम नाथ हो, प्रभु मेरे पालन हार।
शरण पड्यों मैं आपकी म्हारी नैया लगा दिज्यो पार॥ 6॥
देवन पति महादेव जी, सब देवन सिर मोर।
जाकि कृपा कटाक्ष से सुख उपजत चहूँ ओर॥ 7॥
शिव समान कोई नही मन तु देख विचार,
भोले शिव का भजन कर मिथ्या सब संसार॥

* प्रार्थना *

"शिव-शक्ति"

भगवान भोलेनाथ शंकर मेरे मालिक आप हो।
करूणानिधान कृपानिधे अब मेरे स्वामी आप हो ॥ 1 ॥
मैं दीन हूँ, अनाथ हूँ, प्रभु मेरे मालिक आप हो।
मेरे तो पालनहार प्रभुजी मेरे स्वामी आप हो ॥ 2 ॥
भगवान भोलेनाथ शंकर मेरे मालिक आप हो।
करूणानिधान कृपा निधे अब मेरे स्वामी आप हो ॥ 3 ॥
मुझ दीन का कष्ट हरो प्रभु कष्टहारक आप हो।
मुझको बनाने वाले प्रभुजी मेरे स्वामी आप हो ॥ 4 ॥
भगवान भोलेनाथ शंकर मेरे मालिक आप हो।
करूणानिधान कृपानिधे अब मेरे स्वामी आप हो ॥ 5 ॥
उपहार दीनो आपने उपहार दानी आप हो।
मुझको सुखी बनाने वाले मेरे स्वामी आप हो ॥ 6 ॥
भगवान भोलेनाथ शंकर मेरे मालिक आप हो।
करूणानिधान कृपानिधे अब मेरे स्वामी आप हो ॥ 7 ॥
मासूम बच्चों की लाज रखने वाले मेरे स्वामी आप हो।
मेरी भी अर्जी सुनने वाले मेरे मालिक आप हो ॥ 8 ॥
भगवान भोलेनाथ शंकर मेरे मालिक आप हो।
करूणानिधान कृपा निधे अब मेरे स्वामी आप हो ॥ 9 ॥

सबका भला करो भगवान। सबका भला करो भगवान॥ 1॥
दुखिया सब सुखिया हो जावे। पावे सुख महान॥
सबका भला करो भगवान ॥ 2॥
रोगी रोग मुक्त हो जावे। पावे शान्ति महान॥
सबका भला करो भगवान॥ 3॥
पापी पाप मुक्त हो जावे। पावे पद निर्वाण॥
सबका भला करो भगवान॥ 3॥
श्री ताड़केश्वर प्रभुजी के चरणों में सब ध्यान लगावें। तो हो जावे कल्याण।
सबका भला करो भगवान॥ 5॥

ॐ शान्ति ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॐ

* द्वादश ज्योतिर्लिंगानि *

ॐ श्री सोमनाथाय नमः ॐ श्री मल्लिकार्जुनाय नमः
ॐ श्री महाकालेश्वराय नमः ॐ श्री ओङ्करेश्वराय नमः (श्री अमलेश्वर)
ॐ श्री केदारेश्वराय नमः ॐ श्री भीमेश्वराय नमः
ॐ श्री विश्वेश्वराय नमः ॐ श्री नागेश्वराय नमः
ॐ श्री वैद्यनाथाय नमः ॐ श्री त्र्यम्बकेश्वराय नमः
ॐ श्री रामेश्वराय नमः ॐ घुश्मेश्वराय नमः

* श्री नवग्रह उपासना *

ॐ श्री सूर्याय नमः ॐ चन्द्राय नमः
ॐ श्री भौमाय नमः ॐ श्री बुधाय नमः
ॐ श्री गुरूवे नमः ॐ श्री शुक्राय नमः
ॐ श्री शनिश्चराय नमः ॐ श्री राहवे नमः
ॐ श्री केतुवे नमः

* श्री ताड़केश्वर की वन्दना *

सेवा पूजा बन्दगी सबही आपके हाथ, मैं तो कछ जानु नहीं आप जानो भोलेनाथ।
शिव समान दाता नहीं विपति बिढ़ारण हार, लज्जा सबकी राखियो जग के पालन हार॥

उमापति महादेव की जय।

शिव शक्ति माँ शैलजा विन्द वसनी नाम, शक्ति के संयोग से पूर्ण हो सब काज।
सिंह चढ़े दुर्गा मिली गरूड़ चढ़े भगवान, बैल चढे बाबा मिले निश्चित हो कल्याण॥

उमापति महादेव की जय।

ओंमकार में सार है। है अनन्द फलसार, श्री ताड़केश्वरनाथ का साँचा है दरबार।
दाता के दरबार में माँगे सब कर जोड़, देने वाला एक हें माँगे लाख करोड़॥

उमापति महादेव की जय।

कोई कहे कैलाशपति कोई गिरिजानाथ, मैं तो श्री ताड़केश्वरनाथ कहूँ रखियों सिर पर हाथ।
वासी आप कैलाश के बसो हिरदय में आय, पुष्प जल स्वीकार करे हिरदय कमल मुस्काय॥

उमापति महादेव की जय।

* सावण मास में बिल पत्रों की झांकी ई सावण में पुन्य कमाल्यो रे *

"शिव-शक्ति"

ई सावण में पुन्य कमाल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढ़ाल्यो रे॥

ऐऽऽऽ रे – सवा लाख बीला की झांकी हो रही मन्दिर माही।
नर नारिया की लैणा लग रही दरशण करबाताही॥
अपणो आपणो भाग्य जगाल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे। ई सावण में पुन्य......

ऐऽऽऽ रे -ई भोला का सारा भक्त मिल या झांकी बणवाई।
जयपुर का विद्वावाने से ये रूद्री भी करवाई॥
सुण काया ने सफल बणाल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे ई सावण में पुन्य.....
ऐऽऽऽ रे-पोष का महिना माही भक्त गण पोष बडा बणवावे।
पोष खिचडो, पोष बडा को शिव के भोग लगावे॥
आवो परसादी सब पाल्यो रे।
तारक बाबा की झाँकी हो रही बील चढाल्यो रे ई सावण में पुन्य.....
ऐऽऽऽ रे-आसोज, चैत्र का न्योरता माही माँ ने भक्त मनावे।
ललित किशोर जी करे आरती ओम जी भोग लगावे
भवानी माँ ने थे भी मनाल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे ई सावण में पुन्य...
ऐऽऽऽ रे-सुबह, श्याम शिव की होवे आरती पुजारी जी भोग लगावे।
ओमजी, गणेश, झालाणी, सत्य साहू भजन भोज को गावे॥
आवो थे भी सब संग गाल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे। ई सावण में पुन्य...
ऐऽऽऽ रे-रामेश्वरजी, राधेश्याम जी, विनोद, अशोक, हरी ध्यावे।
गुलाब जौशी, ताडी, प्रेम जी, शंकर ध्यावे मनावे॥
करल्यो झांकी, शिव ने ध्याल्यो रे।
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे। ई सावण में पुन्य....
ऐऽऽऽ रे-धन परिवार बढाओ म्हारे दया करो त्रिपुरारी।
सद् गति दे, भव लगा दीज्यो, "शिव-शक्ति" महतारी॥
बन्धन आवा, गमन को हटाल्यो रे
तारक बाबा की झांकी हो रही बील चढाल्यो रे ई सावण में पुन्य...

भजन

''शिव-शक्ति''

ओ ताड़क त्रिपुरारी थांकी महिमा है भारी

मैं दास तिहारा हूँ॥ सुन भोले भंडारी

ओ ताड़क........

इस गम भरी दुनिया से, मैं बच के कहाँ जाऊँ।

तेरी चौखट पर आऊँ, चरणों में झुक जाऊँ॥

आँखों के अश्क कहे, सुन लो अब गंगाधारी॥

ओ ताड़क ....

मैं पापी अधमी हूँ। मुझको भी अपनाओ।

नैणां री प्यास बुझाओ। मन में शिव बस जाओ।

नैया भव सिन्धु से ऽऽऽ । तिर जाएगी यूँ म्हारी।

ओ ताड़क ....

एक पल भी मैं तुमसे, जुदा ना हो पाऊँ।

जब भी जग मैं आऊँ, तोरे ही गुन गाऊँ॥

मोरी विनती सुनलेना, ''शिव शक्ति'' महतारी॥

ओ ताड़क ....

"शिव-शक्ति"

तू ही मेरी नाव का माझी है शिव तारनहार है।
बाबा तेरे ही सहारे मेरा परिवार है॥
मैया तेरे ही आसरे सारा परिवार....

तू ही कस्ती का खिवैया तुझे क्या समझायें।
देखना है तुझ को भोले, कहीं नैया ना फस जाये॥
तेरे हाथों में बाबा इसकी पतवार है।
भोले तेरे ही सहारे सारा परिवार.....
तू ही मेरी नाव का माझी......

नैया को ऐसे खैना शिव किनारा झट जाये।
मिले मंजिल सभी को, तेरे सब गुण गाये॥
भरदो खुशियों से झोली, तु पालन हार है।
बाबा तेरे ही आसरे मेरा परिवार....
तू ही मेरी नाव का माझी.............

इस जग में कौन है मेरा, बता अब मैं कहाँ जाऊँ।
तेरे सिवा कौन है मेरा, तुझे ये कैसे समझाऊं
"शिव-शक्ति" हूँ शरण तेरी तू प्राणाधार है।
बाबा तेरे ही आसरे सारा परिवार है।
तू ही मेरी नाव का माझी..........

* क्षमा प्रार्थना *

"शिव-शक्ति"

मैं तो गुनाहों का पुतला हूँ, मेरे गुनाह क्षमा शिव करना॥
तारक नाथ क्षमा तुम करना, देव शिरोमणी क्षमा तुम करना॥
मैं तो प्रभुजी दास तिहारो, मोरे कष्ट प्रभु तुम हरना।
तारक नाथ दया तुम करना, मेरे गुनाह क्षमा तुम करना॥
तेरी लगन में मगन रहूँ मैं, रखना प्रभुजी तोरे शरना।
तारक नाथ दया तुम करना, मेरे गुनाह क्षमा शिव करना॥
तेरे ही ज्योति जले इस मन में, ऐसी दीप शिखा तुमन धरना।
तारक नाथ दया तुम करना, मेरे गुनाह क्षमा तुम करना॥
पार लगाना मोरी नैया, डूब जायगी देखो वरना।
हे "शिव-शक्ति" दया तुम करना, मेरे गुनाह क्षमा शिव करना॥

* देखो जी तारक जी बाबा थाकी होल्यू आवे *

"शिव-शक्ति"

देखो जी तारक ज बाबा थाकी होल्यू आवे।
थाकी होल्यू आवे, म्हाने चैन न आवे जी, चैन न आवो।
देखो जी तारक जी.................

दर्शन न बिन ये नयना तरसे छ।
थाकी याद में या में पाणी बरसे छ॥
देर बहुत भई दर्श दिखाओ जी दर्श दिखाओ॥
देखो जी तारक जी.................

बीच भंवर में फंसी छ नैया।
बणलो प्रभु कुण ईको खिवया।
थाके सिवा कुण म्हारो पार लगावे जी पार लगावो
देखो जी तारक जी.................

इ जग में प्रभु कुण छ म्हारो।
मुन तो 'शिव-शक्ति' थाको सहारो॥
थासे ही लागी लगन थे ही निभावो जी थे ही निभावो।
देखो जी तारक जी.................

* भजन *

* धुनः ए मालिक तेरे बन्धे हम * "शिव-शक्ति"

अ भोले तेरे बन्दे हम
दुख दूर करो हे शिवम॥
अरजी ध्यान धरो।
प्रभु कुछ तो करो॥
मेरी अरजी का समझो मरम।
अ भोले तेरे बन्दे हम.....

मैंने शरणा लिया है तेरा।
कौन कष्ट हरेगा मेरा॥
किसको अरजी करू।
ध्यान किसका धरू॥
जरा सोचो तो मेरे शिवम। = 3
अरजी ध्यान धरो...........

जालिम ने धोखा दिया।
सारे परिवार को दुखी किया॥
सुख चैन छीना।
दुख बहुत ही दीना॥
दुष्ट ने किया ऐसा सीतम। = 3
अरजी ध्यान धरो.........

अब जागो जागो महाकाल।
शत्रु को करोजी पैमाल॥
उसका सब ही मिटादो।
नैश नाबूद कर दो॥
सर्वनाश करो जी शिवम। = 3
अरजी ध्यान धरो...............

"शिव-शक्ति" सुनलो अब मेरी
नहीं बात जायेगी तोरी॥
प्रभु विनती करू।
चरणा शिश धरू॥
मेरा कष्ट हरोजी शिवम॥ = 3
अरजी ध्यान धरो...........

* शिव-शक्ति मेरे मात-पिता तुम *

"शिव-शक्ति"

शिव-शक्ति मेरे मात पिता तुम,

बालक की सुध भी नहीं लेते,

अरजी क्यों नहीं सुनते।

ऐसी मुझ से भूल हुई क्या भारी।

रूठे क्यों शिव शक्ति महतारी॥

मात-पिता तो निज बालक का,

गुनाह माफ यो ही कर देते।

अरजी क्यों नहीं सुनते।

शिव-शक्ति मेरे मात-पिता तुम,

बालक की सुध भी नहीं लेते,

अरजी क्यों नहीं सुनते।

बहुत दुखी हु मै भौला भण्डारी।

सब जानत हो शिवे महतारी॥

अब तो ध्यान धरो अरजी पर,

निज भक्तो के संकट हरते।

अरजी क्यों नहीं सुनते।

शिव-शक्ति मेरे मात-पिता तुम.............

त्रिशूल संभालो, खडग उठालो।

शत्रु को अब आप ही सभालो ॥

दुष्ट दानव ने दुःखी कर दिया,

विनाश इसका क्यों नहीं करते।

अरजी क्यों नहीं सुनते।

शिव-शक्ति मेरे मात-पिता तुम

अब सुध लो जग सरजनहारी।

सुखी करो जग पालनहारी ॥

शत्रु को भगादो, कष्ट मिटा दो,

सुख दे राहत क्यों नहीं देते।

अरजी क्यों नहीं सुनते।

शिव-शक्ति मेरे मात-पिता तुम।

''शिव-शक्ति'' मोहे सहारा तेरा।

इस जग में नहीं, कोई मेरा ॥

चरण-शरण यो गुलाब थाकी,

मन इच्छा फल क्यों नहीं देते।

अरजी क्यों नहीं सुनते।

• अ भोले बाबा देखो याद रखना •

"शिव-शक्ति"

धुन-तुम ही मेरे मन्दिर, तुम ही मेरी पूजा

अ भोले बाबा देखो याद रखना,
पार लगाना नैया भव से हमारी।
तेरी कृपा से शिव तेरे जग में आया हूँ।
मन में तेरी ज्योत जली, तुम को ही ध्याया हु ॥

कुछ भी सेवा कर ना पाया, फिर भी याद रखना,
ज्योत में ज्योति मिलाना हमारी।
अ भोले बाबा देखो याद रखना
दुख, सुख, का जग में, साँझा सवेरा है।
किया वैसा भोगा मैंने, नहीं दोष तेरा है।

बचाना बुराई से, इतनी याद रखना,
कहीं फंस ना जाये तेरा पुजारी।
अ भोले बाबा देखो याद रखना.......
हे "शिव-शक्ति" मुझे तुम्हे ही निभाना है।
ये वादा रहा भव से पार भी लगाना है ॥

किये गुनाह माफ करना, तुम तो दयालु हो।
दया की है आदत शिवे त्रिपुरारी।
अ भोले बाबा देखो याद रखना........

* शिव-शक्ति तुम निरंकार रूप में परम ब्रह्म कहलाती हो। *

"शिव-शक्ति"

शिव शक्ति ओ निरंकार में परम ब्रह्म कहाते हो।
ॐ रूप शिव, शक्ति ज्योति रूप बताते हो।

शिव शक्ति...............

सृष्टी रचना करने आई। ज्योति से प्रकट हुई ये भाई।
देखो सृष्टी कैसी रचाई, देव सब इनको ध्याते हो।

ॐ रुप..................
शिव शक्ति............

ॐ के त्रिगुण रूप है भारी। ब्रह्मा, विष्णु और त्रिपुरारी।
ॐ की महिमा बहुत ही भारी, इस सृष्टी को निभाते हो।

ॐ रूप............
शिव शक्ति.........

"शिव-शक्ति" हो प्राणाधार। मेरी नैया लगा देना पार।
भर दो अन्न, धन का भण्डार, भक्त क पार लगाते हो।

ॐ रूप.................
शिव-शक्ति..........

* ॐ जूं सः जपले रे प्राणी *

"शिव-शक्ति"

ॐ जूं सः जपले रे प्राणी, जपने में हो जा अगवा।
शिव भोले देवाधी देव है, आदि शक्ति है माँ शिवा॥
ये ही तो है सृष्टी रचियता, ये ही तो है पालनहार।
ये ही संहार कर्ता ये ही है जग सरजनहार॥
इनकी कृपा से फुल खिलत है दया से पकते हैं अमवा।
शिव भोले देवाधी देव है............

जब भी भीर पड़ी भक्त न पर, आप उसी क्षण आते हैं।
निज भक्तो के शिव शक्ति ये बिगड़े काम बनाते हैं।
इनका ध्यान लगाले रे प्राणी इनको ही तु शिशनवा।
शिव भोले देवाधी देव है............

मार्कण्डे पर संकट आया उसने भी इनको ध्याया।
अर्ज सुनी जब भक्त राज की शिव शक्ति तत्काल आया।
आये उनकी रक्षा करने, भाग गये देखा यमुवा।
शिव भोले देवाधी देव है............

मैं भी देखो ध्याऊ मनाऊ, शरण आपकी आयो हूँ।
"शिव-शक्ति" ही प्राणाधार है। मै जीवन में चायो हूँ।
"शिव-शक्ति" अब दर्श दिखाओ, चाहत है मरो मनवा
शिव भोले देवाधी देव है............

* बहुत दिल से चाहते हैं तुमको शिवम् *

"शिव-शक्ति"

धुन-बहुत प्यार करते है तुम को सनम

बहुत दिल से चाहते हैं तुमको शिवम।
तुम सा ना सुन्दर कोई कुर्बान हम॥
बहुत दिल से चाहते हैं ....

शिव जटा में सोहे गंग की धारा।
कानों में कुण्डल, गल वासुनाग प्यारा॥
दर्शन की प्यासी अखिया-2 रहती है नम।
बहुत दिल से चाहते हैं ....

चन्द्र तिलक छबी नयन कजरारे।
सुर्ख कपोल, कलिया होट तिहारे॥
ऐ सुन्दर भोले हो = 2 छबी अनुपम
बहुत दिल से चाहते हैं ....

संग गणपति, कार्तिक, मात भवानी।
डमरू त्रिशुल सौहे ओढर दानी॥
दर्शन की चाहत भोले-2 ना होगी कम।
बहुत दिल से चाहते हैं ....

चहाते हैं कितना तुमको कैसे बताये।
दर्श दिखादो दिल को चैन भी आये।
'शिव-शक्ति' चहायगें हम-2 जब तक है दम।
बहुत दिल से चाहते हैं ....

"शिव-शक्ति"

धुन-तुम ही मेरे मन्दिर, तुम ही मेरी पूजा

अ भोले बाबा देखो याद रखना,
पार लगाना नैया भव से हमारी।
तेरी कृपा से शिव तेरे जग में आया हूँ।
सुख का सबेरा, अब तक देख नहीं पाया हूं॥
फिर ना मैं आउ जग में इतनी याद रखना।
जोत में ज्योति मिलाना हमारी।
अ भोले बाबा देखो याद रखना...........

पिछले जनम के मेरे करमो का फेरा है।
किया जो भोगा मैंने, नहीं दोष तेरा है॥
अब की बचाना है, देखो याद रखना
कहीं फस ना जाये तेरा पुजारी।
अ भोले बाबा इतनी याद रखना............

हे 'शिव-शक्ति' तेरा एक सहारा है।
तेरे सिवा जग में कौन हमारा है॥
सेवक की विनती है इतनी याद रखना।
शरण पड़ा हूँ मैं तो तिहारी।
अ भोले बाबा देखो याद रखना..........

* सुदर्शन चक्र *

"शिव शक्ति"

मुखड़ा

अजी ओजी बाबा कांई गुण गाऊँजी म्हारा गान में चक्र सुदर्शन दे दियो दान में।

अन्तरा-ऐजी थांकी महिमा को तारकजी पार नहीं कोई पायो।

अन्तरा

ऐ जी अमृत ने थें बांट दियो प्रभु विष ने कंठ जमायो॥

गणपति लाला ने पहली पुजवायो जी सारा जहान में।

चक्र सुदर्शन दे दियो दान में। अजी ओजी बाबा...........

ऐजी दानव पति और दानव भी प्रभु थाने दानी बतायो।

ऐजी घोर तपस्या करी आपकी मन इच्छा फल पायो॥

कार्तिकलाला ने रक्षक बणायो जी देव फौजान में।

चक्र सुदर्शन दे दियो दान में। अजी ओजी बाबा...........

ऐजी महिषासुर ने वर देकर प्रभु कांई खेल खिलायो।

ऐजी त्रिलोकी को राजा बण गयो सब पर संकट आयो॥

उन्हें मरवाथो मात भवानी से जी मैदान में।

चक्र सुदर्शन दे दियो दान में। अजी ओजी बाबा...........

ऐजी तारकजी ने जो भी ध्यावै दर्शन करबा आवे।

ऐजी सुख पावे दुख जावे प्रभुजी भव से भी तिर जावे॥

ओ "शिवजी" बाबा, शरणे आयो छूँ जी नादान मैं।

चक्र सुदर्शन दे दिया दान में। अजी ओजी बाबा...........

* नमः शिव जप ले रे प्राणी *

''शिव-शक्ति''

नमः शिवाय तू जप ले रे प्राणी शिवजी दया दिखावेला।
काल कष्ट दारिद्र हरेला अन्न-धन खूब दिलावेला॥
यांकी लीला अजब निराली, पार नहीं कोई पायो छ।
ब्रह्मा, विष्णु सभी देवता यांको ध्यान लगायो छ॥
यांको ध्यान लगा ले रे प्राणी नैना री प्यास बुझावेला।
काल कष्ट दारिद्र हरेला अन्न-धन खूब दिलावेला॥
जद-जद भीर पड़ी भक्तन पर, तुरत उसी दम आया छ।
निज भक्ता का तारक बाबा, बिगड्या काम बनाया छ॥
यांका गुण गा ले रे प्राणी, आनन्द खूब करावेला।
काल कष्ट दारिद्र हरेला अन्न-धन खूब दिलावेला॥
यांको तप सुर दानव कीन्हों यांने खूब मनाया छ।
ओढ़रदानी महाकाल से, मुहं मांग्या वर पाया छ॥
''शिव-शक्ति'' ने ध्यावो-मनावो भव से पार लगावेगा।
काल कष्ट दारिद्र हरेला अन्न-धन खूब दिलावेला॥

आवागमन का फैरा निवारण वंदना

''शिव-शक्ति''

अ भोला यो वादो रहयो, म्हारी भव से पार लगावो ला।
पार लगाकर आवागमन को फैरो देखो हटावोला॥
यो जीवन अरपण करदीनो हूँ शरण पड्योय हूँ त्रिपुरारी।
मीरा, ध्रुव, प्रहलाद ने तार्या, अब की लीज्यो म्हारी बारी॥
जब भी धाम बुलावों थाके ज्योत में ज्योति मिलावोला।
पार लगाकर आवागमन को............
अ भोला यो वादो रहयो, म्हारी भव से पार लगावो ला।
ईं जग में कोई नहीं म्हारो, मुने एक थांको सहारो।
हे ''शिव-शक्ति'' अब थे ही सोचो धणी धोरी है कुण-म्हारो॥
आश लगाया बैठ्यो हूँ यो वादो दोन्यू निभावोला॥
पार लगाकर आवागमन को............
अ भोला यो वादो..........

॥ श्री दारिद्रयदहनस्त्रोतम ॥

ताडकेश्वराय नरकार्णवतारणाय, कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय, दारिद्रदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय, कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय।
गंगाधराय गजराजविर्मदनाय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय, उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योर्तिमयाय गुणनामसुनृत्यकाय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय, भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंजीरपादयुगलाय जटाधाराय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय।
पंचाननाय फणिराजविभुषणाय, हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
भानुप्रियाय भवसागरतारणाय, कालान्तकाय कमलासनूपजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्य भरिताय सुरार्चिताय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय, गीत प्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय।
मातंङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय, दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥

शिव-शक्ति के नाम की सभी स्तुतियाँ (वंदना) पंजीकृत है कृपया आर्थिक लाभ उठाने का कष्ट नहीं करें (पुस्तक पाठ हेतु निःशुल्क वितरण होती है।)

प्राप्ति स्थान

श्री गुलाब जोशी

384, शिव-शक्ति निवास, प्रथम चौराहा,
नाहरगढ़ रोड़, जयपुर फोन : 2312750

शिव शंकर बुक डिपो

दुकान नं. 5, राधादामोदर जी की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर फोन नं. : 2318590